दिनांक 09 नवम्बर, 2010 को लखनऊ में आयोजित कुलपति सम्मेलन हेतु महामहिम श्री राज्यपाल का उद्‌बोधन।

————

देवियों और सज्जनों,

आज यहाँ आयोजित इस कुलपति सम्मेलन में आकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। उच्च शिक्षा को आवश्यक गति प्रदान करने और उच्च शिक्षा की विभिन्न समस्याओं पर विचार कर समाधान खोजने के लिए काफी अन्तराल के बाद आज इस कुलपति सम्मेलन का आयोजन किया गया है। मेरा मानना है कि ऐसे सम्मेलन समस्या

के निदान व नई प्राथमिकताओं को तय करने का अवसर देते हैं अतः निरन्तर अन्तराल से आयोजित किये जाने चाहिये। मैं आज यहाँ उपस्थित सभी विद्वतजनों का स्वागत करता हूँ।

विश्वविद्यालय समाज की बौद्धिक विरासत के संरक्षक होते हैं। अतः हमारी शिक्षा नीति में शिक्षा की गुणवत्ता के साथ–साथ चरित्र और संस्कारों के निर्माण पर आवश्यक जोर दिया जाना चाहिए। इस संबंध में डा0 सम्पूर्णानन्द ने कहा है कि ''मन और शरीर का, चरित्र के भावों का परिष्कार हो, शिक्षा का यही प्रयोजन है''।

हमारी शिक्षा प्रणाली की कुछ बातों पर विचार करना जरूरी है। विश्वविद्यालय सिर्फ डिग्री बांटने वाली संस्थायें न बनकर छात्रों के

स्वर्णिम भविष्य के सपने को साकार करने में सहायक होने चाहिये। आज विश्वविद्यालय सुचार रूप से परीक्षाएं भी नहीं संचालित करा पा रहे हैं। अनियमित सत्र की वजह से हमारे छात्रों को प्रदेश के बाहर प्रवेश पाने तथा प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने से वंचित रहना पड़ता है। इस समस्या का हल तत्काल खोजा जाना चाहिए। बिना सम्बद्धता अथवा मान्यता एवं अनुमन्य संख्या से अधिक छात्रों के प्रवेश एवं परीक्षा आयोजित करने पर भी रोक लगनी चाहिये। इसी के साथ–साथ परीक्षा एवं परीक्षाफल निर्गत किये जाने में समयबद्धता होनी चाहिये। शिक्षा की तथा उच्च शिक्षण संस्थाओं की इस स्थिति से हर विचारवान व्यक्ति को चिन्तित होना चाहिए।

हमारी उच्च शिक्षा की वर्तमान प्रणाली बिना किसी उद्देश्य के काफी बड़ी संख्या में स्नातक उत्पन्न कर रही, जिसमें से बहुतों को या तो रोजगार ही नहीं मिलता और या फिर जो रोजगार हासिल करने लायक नहीं होते। उच्चतर माध्यमिक स्तर के बाद अधिकतर हमारे पाठ्यक्रमों को रोजगार मूलक बनाना, विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों में अनुशासन और शांति व्यवस्था को बनाये रखना अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षा के प्रशासकों को आज देखना चाहिये कि वे इस समस्या का समाधान कैसे निकाले। इतने गौरवमय अतीत की साक्षी इन शिक्षण संस्थाओं की गिरावट के लिए क्या कारण है, इस पर हमें विचार करना होगा और इनका निदान खोजना होगा।

शिक्षा की प्रगति का सबसे महत्वपूर्ण संसाधन अध्यापक है। हमारे अध्यापकों में प्रतिबद्धता की भावना होना बहुत जरूरी है। क्या आज अध्यापक गम्भीर शोध कर रहे हैं और अपने काम के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं? क्या आज शिक्षकों को ऐसे साधन उपलब्ध है कि वे अपने क्षेत्र में अपने ज्ञान को अद्यतन रख सकें? क्या कारण है कि आज अकादमीशियनों का सरोकार केवल किसी तरह शिक्षा सत्र पूरे करना एवं अपने सर्विस सम्बन्धित मामलों में उलझे रहना हो रहा है। शिक्षकों को स्वयं आत्म अन्वेषण करना चाहिये कि वे किस तरह अपने दायित्व को पूरा कर सकते हैं।

रैगिंग और परीक्षाओं में नकल रोकना बहुत महत्वपूर्ण है। कुलाधिपति होने के नाते मुझे अक्सर ऐसे प्रार्थना पत्र प्राप्त होते रहते है कि अनेक प्रयास के बाद भी अंक पत्र व उपाधि पत्र समय से प्राप्त नहीं हो पा रहे है। ऐसे मामले कुलपति के अधिकार क्षेत्र में होते हैं, तो कुलाधिपति कार्यालय में अनुरोध पत्र देने की आवश्यकता क्यों पड़ती है ?

शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिये राष्ट्रीय ज्ञान आयोग की संस्तुतियां व उच्च शिक्षा विभाग द्वारा गठित उच्च स्तरीय समीतियों की अनुशंसाओं एवं क्रियान्वयन पर भी विस्तार से विचार होना चाहिये। विभिन्न विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध चिकित्सा महाविद्यालयों को

छत्रपति शाहूजी महाराज चिकित्सा विश्वविद्यालय, लखनऊ के अधीन लाने पर विचार होना चाहिये और ठीक उसी तरह वैटरनरी महाविद्यालयों को पशु विज्ञान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध करने पर विचार करने की जरूरत है।

विश्वविद्यालय के वित्तीय संसाधनों में भी वृद्धि करने की आवश्यकता है। इसके लिए यह जरूरी है कि हमारे विश्वविद्यालय शासकीय अनुदान पर निर्भरता को कम करें। आन्तरिक आय के स्रोतों में वृद्धि करने पर गम्भीरता से विचार करें। उच्च शिक्षा कैसे सर्व–सुलभ हो इस पर भी चर्चा की जरूरत है। शोध एवं कन्सलटेन्सी सेवायें चलायी जा सकती हैं। शोध कार्य, औद्योगिक,

कृषि एवं आर्थिक क्षेत्रों से इस प्रकार सम्बद्ध विकास किया जाय कि विशिष्टीकरण एवं शोध सामाजिक समृद्धि, विकास एवं प्रगति का साधन बन सके।

आज का एजेण्डा आपने देख लिया होगा। इसमें उल्लेख किये गये सभी बिन्दु महत्वपूर्ण हैं, जिन पर आपको गंभीर विचार–विमर्श करना है। मुझे विश्वास है कि विचारों के ऐसे ही आदान–प्रदान से हम उच्च शिक्षा को नई दिशा दे सकेंगे तथा इस समय सामने उपस्थित चुनौतियों व समस्याओं का सामना कर सकेंगे।

हम अगर अभी शिक्षा को नई दिशा दे सकने में समर्थ होंगे, तभी व्यवस्था में सुधार होगा। हमें याद रखना चाहिये कि उच्च शिक्षा

में सुधार न केवल हमारे राष्ट्र के विकास के लिए, बल्कि हमारे अस्तित्व के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है।

आज के विचार मंथन से इस व्यवस्था को सुधारने की कोई राह हम निकाल सकें, तभी इस बैठक की सार्थकता होगी।

धन्यवाद – नमस्कार।